५. अथातो घुमक्कड़ -जिज्ञासा

-पं. राहुल सांकृत्यायन

शास्त्रों में जिज्ञासा ऐसी चीज के लिए होनी बतलाई है जो कि श्रेष्ठ तथा व्यक्ति और समाज सबके लिए परम हितकारी हो । दुनिया दुख में हो चाहे सुख में, सभी समय यदि सहारा पाती है तो घुमक्कड़ों की ही ओर से । प्राकृतिक आदिम मनुष्य परम घुमक्कड़ था । खेती, बागवानी तथा घर-द्‌वार से मुक्त आकाश के पक्षियों की भाँति पृथ्वी पर सदा विचरण करता था । जाड़े में यदि इस जगह था, तो गर्मियों में वहाँ से दो सौ कोस दूर ।

आधुनिक काल में घुमक्कड़ों के काम की बात कहने की आवश्यकता है क्योंकि लोगों ने घुमक्कड़ों की कृतियों को चुराके उन्हें गला फाड़-फाड़ अपने नाम से प्रकाशित किया, जिससे दुनिया जानने लगी कि वस्तुतः कोल्हू के बैल ही दुनिया में सब कुछ करते हैं। आधुनिक विज्ञान में चार्ल्स डार्विन के प्रकाश में दिशा बदलनी पड़ी। लेकिन क्या डार्विन अपने महान आविष्कारों को कर सकता था, यदि उसने घुमक्कड़ी का व्रत नहीं लिया होता ?

मैं जानता हूँ, पुस्तकें भी कुछ-कुछ घुमक्कड़ी का रस प्रदान करती हैं, लेकिन जिस तरह फोटो देखकर आप हिमालय के देवदार के गहन वनों और श्वेत हिम मुकुटित शिखरों के सौंदर्य, उनके रूप, उनके गंध का अनुभव नहीं कर सकते उसी तरह यात्रा कथाओं से आपको उस बूँद से भेंट नहीं हो सकती जो कि एक घुमक्कड़ को प्राप्त होती है । आदिम घुमक्कड़ों में से आर्यों, शकों, हूणों ने क्या-क्या किया, अपने खूनी पथों द्‌वारा मानवता के पथ को किस तरह प्रशस्त किया, इसे इतिहास में हम उतना स्पष्ट वर्णित नहीं पाते, किंतु मंगोल घुमक्कड़ों की करामतों को तो हम अच्छी तरह जानते हैं । बारूद, तोप, कागज, छापखाना, दिग्दर्शक, चश्मा यही चीजें थीं, जिन्होंने पश्चिम में विज्ञानयुग का आरंभ कराया और इन चीजों को वहाँ ले जाने वाले मंगोल घुमक्कड़ थे ।

कोलंबस और वास्को-द-गामा दो घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने पश्चिमी देशों के आगे बढ़ने का रास्ता खोला। अमेरिका अधिकतर निर्जन-सा पड़ा था। एशिया के कूपमंडूकों को घुमक्कड़ धर्म की महिमा भूल गई, इसलिए उन्होंने अमेरिका पर अपने झंडे नहीं गाड़े । दो शताब्दियों पहले तक आस्ट्रेलिया खाली पड़ा था । चीन और भारत को सभ्यता का बड़ा गर्व है। इनको इतनी समझ नहीं आई कि जाकर वहाँ अपना झंडा गाड़ आते। आज

परिचय

जन्म : १८९३, आजमगढ़ (उ.प्र.)
मृत्युः १९६३
परिचय : छत्तीस भाषाओं के ज्ञाता राहुल सांकृत्यायन जी ने उपन्यास, निबंध, कहानी, आत्मकथा, संस्मरण व जीवनी आदि विधाओं में साहित्य सृजन किया है । घुमक्कड़ी यानी गतिशीलता आपके जीवन का मूलमंत्र रही है । आधुनिक हिंदी साहित्य में आप एक यात्राकार, इतिहासविद्, तत्त्वान्वेषी युगपरिवर्तनकार, साहित्यकार के रूप में जाने जाते हैं।
प्रमुख कृतियाँ : 'सतमी के बच्चे', 'वोल्गा से गंगा' (कहानी संग्रह), 'सिंह सेनापति', 'भोगा नहीं', 'दुनिया को बदलो' (उपन्यास), 'मेरी जीवन यात्रा' (आत्मकथा), 'महामानव बुद्‌ध', 'घुमक्कड़ स्वामी', 'लेनिन' (जीवनी), 'किन्नर देश की ओर' 'मेरी लद्‌दाख यात्रा', 'मेरी तिब्बत यात्रा', 'रूस में पच्चीस मास' (यात्रा वर्णन) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत वैचारिक निबंध में राहुल सांकृत्यायन जी ने 'घुमक्कड़ी' अर्थात यात्रा करने की उपयोगिता पर विशद रूप से प्रकाश डाला है ।

आपका मानना है कि यात्रा करने या देश-विदेश घूमने से ज्ञान में अभिवृद्‌धि होती है । किसी विषय वस्तु की जानकारी, पढ़कर प्राप्त करने की तुलना में प्रत्यक्ष जाकर देखना अधिक प्रभावी होता है ।

अपने अरबों की जनसंख्या के भार से भारत और चीन की भूमि दबी जा रही है और आस्ट्रेलिया में एक करोड़ भी आदमी नहीं हैं । आज एशियाइयों के लिए आस्ट्रेलिया का द्‌वार बंद है लेकिन दो सदी पहले वह हमारे हाथ की चीज थी। क्यों भारत और चीन आस्ट्रेलिया की अपार संपत्ति और अमित भूमि से वंचित रह गए? इसीलिए कि वह घुमक्कड़ धर्म से विमुख थे, उसे भूल चुके थे ।

हाँ, मैं इसे भूलना ही कहूँगा क्योंकि किसी समय भारत और चीन ने बड़े-बड़े नामी घुमक्कड़ पैदा किए । वे भारतीय घुमक्कड़ ही थे, जिन्होंने दक्षिण-पूरब में लंका, बर्मा, मलाया, यवद्‌वीप, स्याम, कंबोज, चंपा, बोर्नियो और सेलीबीज ही नहीं, फिलीपीन तक का धावा मारा था, और एक समय तो जान पड़ा कि न्यूजीलैंड और आस्ट्रेलिया भी बृहत्तर भारत का अंग बनने वाले हैं; लेकिन कूपमंडूकता तेरा सत्यानाश हो! देश के बुद्‌धिमानों ने उपदेश करना शुरू किया कि समुंदर के खारे पानी और धर्म में बड़ा बैर है, उसके छूने मात्र से वह नमक की पुतली की तरह गल जाएगा। इतना बतला देने पर क्या कहने की आवश्यकता है कि समाज के कल्याण के लिए घुमक्कड़ धर्म को भूलने के कारण ही हम सात शताब्दियों तक धक्का खाते रहे, ऐरे-गैरे जो भी आए, हमें चार लात लगा गए ।

कोई-कोई महिलाएँ पूछती हैं-क्या स्त्रियाँ भी घुमक्कड़ी कर सकती हैं, क्या उनको भी इस महाव्रत की दीक्षा लेनी चाहिए ? इसके बारे में यहाँ इतना कह देना है कि घुमक्कड़ धर्म संकुचित धर्म नहीं है, जिसमें स्त्रियों के लिए स्थान नहीं हो । स्त्रियाँ इसमें उतना ही अधिकार रखती हैं, जितना पुरुष। यदि वह जन्म सफल करके व्यक्ति और समाज के लिए कुछ करना चाहती हैं, तो उन्हें भी दोनों हाथों इस धर्म को स्वीकार करना चाहिए। बुद्‌ध ने सिर्फ पुरुषों के लिए घुमक्कड़ी करने का आदेश नहीं दिया, बल्कि स्त्रियों के लिए भी उनका वही उपदेश था ।

भारत के प्राचीन धर्मों में जैन धर्म भी है। जैन धर्म के प्रतिष्ठापक श्रमण महावीर कौन थे ? वह भी घुमक्कड़ी के राजा थे। घुमक्कड़ धर्म के आचरण में छोटी-से-बड़ी तक, सभी बाधाओं और उपाधियों को उन्होंने त्याग दिया था। घर-द्‌वार और नारी-संतान ही नहीं, वस्त्र का भी वर्जन कर दिया था। ''करतल भिक्षा, तरुतल वास'' तथा दिगंबर को उन्होंने इसीलिए अपनाया था कि निर्द्‌वंद्‌व विचरण में कोई बाधा न रहे। मर्मज्ञ सहमत हैं कि भगवान् महावीर दूसरी-तीसरी नहीं, प्रथम श्रेणी के घुमक्कड़ थे। वह आजीवन घूमते ही रहे । वैशाली में जन्म लेकर विचरण करते हुए पावा में उन्होंने अपना शरीर छोड़ा। आज-कल कुटिया या आश्रम बनाकर बैल की तरह कोल्हू से बँधे कितने ही लोग अपने को अद्‌वितीय महात्मा कहते हैं या

अपने बुजुर्गों द्‌वारा की हुई किसी यात्रा का वर्णन सुनिए ।

भारत की घुमंतू जातियों के जीवन की जानकारी अंतरजाल से पढ़िए तथा कक्षा में चर्चा कीजिए ।

चेलों से कहलवाते हैं; लेकिन मैं तो कहूँगा कि वे ऐसे मुलम्मेवाले महात्माओं और महापुरुषों के फेर से बचे रहें ।

इनकारी महापुरुषों की बात से यह नहीं मान लेना होगा कि दूसरे लोग ईश्वर के भरोसे गुफा या कोठरी में बैठकर सारी सिद्धियाँ पा गए या पा जाते हैं । यदि ऐसा होता तो शंकराचार्य जो साक्षात ब्रह्मस्वरूप थे क्यों भारत के चारों कोनों की खाक छानते फिरे ? शंकर को शंकराचार्य किसी ब्रह्म ने नहीं बनाया, उन्हें बड़ा बनाने वाला था यही घुमक्कड़ी धर्म । आचार्य शंकराचार्य बराबर घूमते रहे –आज केरल में थे, दो ही महीने बाद मिथिला में और अगले साल कश्मीर या हिमालय के किसी दूसरे भाग में । आचार्य शंकर तरुणाई में ही शिवलोक सिधार गए किंतु थोड़े से जीवन में उन्होंने सिर्फ तीन भाष्य ही नहीं लिखे; बल्कि अपने आचरण से अनुयायियों को वह घुमक्कड़ी का पाठ पढ़ा गए कि आज भी उसके पालन करने वाले सैकड़ों मिलते हैं । वास्को-द-गामा के भारत पहुँचने से बहुत पहले शंकराचार्य के शिष्य मास्को और यूरोप तक पहुँचे थे । उनके साहसी शिष्य सिर्फ भारत के चार धामों से ही संतुष्ट नहीं थे, बल्कि उनमें से कितनों ने जाकर बाकू (रूस) में धूनी रमाई । एक ने पर्यटन करते हुए वोल्गा तट पर निज्नीनोवोग्राद के महामेले को देखा । फिर क्या था, कुछ समय के लिए वहीं डट गया और उसने रूसियों के भीतर कितने ही अनुयायी पैदा कर लिए, जिनकी संख्या भीतर-ही-भीतर बढ़ती हुई इस शताब्दी के आरंभ में कुछ लाख तक पहुँच गई थी ।

भला हो, रामानंद और चैतन्य का, जिन्होंने पंक से पंकज बनकर आदिकाल से चले आए महान घुमक्कड़ धर्म की फिर से प्रतिष्ठापना की, जिसके फलस्वरूप प्रथम श्रेणी के तो नहीं, किंतु द्वितीय श्रेणी के बहुत से घुमक्कड़ पैदा हुए ।

दूर शताब्दियों की बात छोड़िए, अभी शताब्दी भी नहीं बीती, इस देश से स्वामी दयानंद को विदा हुए । स्वामी दयानंद को ऋषि दयानंद किसने बनाया ? घुमक्कड़ी धर्म ने । उन्होंने भारत के अधिक भागों का भ्रमण किया; पुस्तक लिखते, शास्त्रार्थ करते वह बराबर भ्रमण करते रहे ।

बीसवीं शताब्दी के भारतीय घुमक्कड़ों की चर्चा करने की आवश्यकता नहीं । इतना लिखने से मालूम हो गया होगा कि संसार में यदि कोई अनादि सनातन धर्म है, तो वह घुमक्कड़ धर्म है । लेकिन वह संकुचित संप्रदाय नहीं है, वह आकाश की तरह महान है, समुद्र की तरह विशाल है । जिन धर्मों ने अधिक यश और महिमा प्राप्त की है, वह केवल घुमक्कड़ थे, उनके अनुयायी भी ऐसे घुमक्कड़ थे जिन्होंने धर्म के संदेश को दुनिया के कोने-कोने में पहुँचाया ।

संभाषणीय

अपनी सैर में घटी कोई हास्य घटना मित्रों/सहेलियों को बताइए ।

इतना कहने से अब कोई संदेह नहीं रह गया कि घुमक्कड़ धर्म से बढ़कर दुनिया में धर्म नहीं है। घुमक्कड़ी वही कर सकता है जो निश्चिंत है। किन साधनों से संपन्न होकर आदमी घुमक्कड़ बनने का अधिकारी हो सकता है, यह आगे बतलाया जाएगा; किंतु घुमक्कड़ी के लिए चिंताहीन होना आवश्यक है, और चिंताहीन होने के लिए घुमक्कड़ी भी आवश्यक है। दोनों का अन्योन्याश्रय होना दूषण नहीं, भूषण है। घुमक्कड़ी से बढ़कर सुख कहाँ मिल सकता है? आखिर चिंताहीनता तो सुख का स्पष्ट रूप है। घुमक्कड़ी में कष्ट भी होते हैं, लेकिन उसी तरह समझिए जैसे भोजन में मिर्च। मिर्च में यदि कड़वाहट न हो, तो क्या कोई मिर्चप्रेमी उसमें हाथ भी लगाएगा? वस्तुतः घुमक्कड़ी में कभी-कभी होने वाले कड़वे अनुभव उसके रस को और बढ़ा देते हैं, उसी तरह जैसे काली पृष्ठभूमि में चित्र अधिक खिल उठता है।

व्यक्ति के लिए घुमक्कड़ी से बढ़कर कोई नकद धर्म नहीं है। मानव जाति का भविष्य घुमक्कड़ी पर निर्भर करता है इसलिए मैं कहूँगा कि हरेक तरुण और तरुणी को घुमक्कड़ व्रत ग्रहण करना चाहिए। इसके विरुद्ध दिए जाने वाले सारे प्रमाणों को झूठ और व्यर्थ समझना चाहिए। हजारों बार के तजुर्बे की हुई बात है कि महानदी के वेग की तरह घुमक्कड़ की गति को रोकने वाला दुनिया में कोई पैदा नहीं हुआ।

संक्षेप में हम यह कह सकते हैं, यदि तरुण-तरुणी घुमक्कड़ी धर्म की दीक्षा लेते हैं तो-यह मैं अवश्य कहूँगा कि यह दीक्षा वही ले सकता है, जिसमें बहुत भारी मात्रा में हर तरह का साहस है।

—— ० ——

लेखनीय

अपनी कक्षा द्‌वारा की गई किसी क्षेत्रभेंट का वर्णन लिखिए।

शब्द संसार

जिज्ञासा स्त्री.सं.(सं.) = जानने की इच्छा, ज्ञान की चाह

घुमक्कड़ वि.(हिं.) = बहुत घूमने वाला

मर्मज्ञ वि.(सं.) = भेद, रहस्य समझने वाला

मुलम्मा वि.(अ.) = चमकाया हुआ, चाँदी या सोने का पानी चढ़ाया हुआ परत

भाष्य पुं. सं.(सं.) = सूत्र या मूल ग्रंथ की व्याख्या

दूषण पुं.सं.(सं.) = दोष, खराबी

तजुर्बा पुं. सं.(फा.) = अनुभव

स्वाध्याय

*** सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :–**

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :

यहूदियों को प्राप्त अवसर के क्षेत्र

------- ------- ------- -------

(२) कृति पूर्ण कीजिए :

१. जिज्ञासा इनके लिए परम हितकारी –

----

२. आदिम मनुष्य इनसे मुक्त था–

----

(३) कृति पूर्ण कीजिए :

१. पश्चिमी देशों को आगे बढ़ाने वाले

२. अत्यधिक जनसंख्या के भार से दबे जा रहे देश

----

(४) इन चीजों ने विज्ञान युग का प्रारंभ किया

(५)लिखिए :

१. आकृति में दिए शब्दों से कृदंत तथा तद्धित बनाइए :

व्यक्ति, बात, पथ, घूमना, बदलना, स्थान, देना, चाहना

कृदंत	तद्धित
------	------
------	------
------	------
------	------

२. शब्द समूह के लिए एक शब्द लिखिए :

(अ) पथ को दर्शाने वाला – ....

(आ) संकुचित वृत्तिवाला – ....

(इ) सदैव घूमने वाला – ....

(ई) सौ वर्षों का काल – ....

अभिव्यक्ति पर्यटन से होने वाले विभिन्न लाभों के बारे में अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्न वाक्यों में अलंकार पहचानकर बताइए :

१. लट लटकनि मनो मत्त मधुप गन मादक मधुहि पियें । (..................)

२. मधुबन की छाती को देखो ।
सूखी कितनी इसकी कलियाँ । (..................)

३. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि । (..................)

४. मेरी भव-बाधा हरौ राधा नागरि सोई ।
जा तन की झाईं परै, स्यामु हरित दुति होई ।। (..................)

५. कहै कवि बेनी बेनी ब्याल की चुराई लीनी । (..................)

६. तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं । (..................)

७. जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं । (..................)

८. हाय फूल-सी कोमल बच्ची ।
हुई राख की थी ढेरी ।। (..................)

९.प्रातः नभ था बहुत नीला शंख जैसे (..................)

१०. संसार की समरस्थली में धीरता । (..................)

११. सुख चपला-सा, दुख घन में
उलझा है चंचल मन कुरंग । (..................)

१२. चमचमात चंचल नयन बिच घूँघट पर झीन
मानहु सुरसरिता विमल जल बिछुरत जुग मीन ।। (..................)

१३. मानो घर-घर न हो, जैसे कोई चिड़ियाघर हो ।
जिसमें खूँखार जानवर आबाद हों । (..................)

(२) निम्नलिखित पद्यांशों में मात्राओं की गणना करके छंदों के नाम लिखिए :

१. कबिरा संगत साधु की, ज्यों गंधी की बास ।
जो गंधी कुछ दे नहीं, तो भी बास सुवास ।।

प्रथम चरण = ____________ मात्राएँ द्‌वितीय चरण = ____________ मात्राएँ

तृतीय चरण= ____________ मात्राएँ चतुर्थ चरण = ____________ मात्राएँ

छंद : ____________

२. भोजन करत बुलावत राजा । नहिं आवत तजि बाल समाजा ।
कौसल्या जब बोलन जाई । ठुमकु-ठुमकु प्रभु चलहि पराई ।।

प्रथम चरण = ____________ मात्राएँ द्‌वितीय चरण = ____________ मात्राएँ

तृतीय चरण = ____________ मात्राएँ चतुर्थ चरण = ____________ मात्राएँ

छंद : ____________

उपयोजित लेखन

'मेरी अविस्मरणीय सैर' विषय पर अस्सी से सौ शब्दों में निबंध लिखिए ।

7HVL36